पाठ – पहली बूँद

कविता का सारांश

कवि ने इस कविता में बूंद की महत्ता का वर्णन किया है। कवि बताता है कि वह पवित्र दिन था जब घूँट पृथ्वी पर आई थी। बीज अंकुरित होकर प्रस्फुटित होकर धरती से निकलने लगे। नवीन जीवन ने भी अंगड़ाई ली। जब धरती पर सूखा था तब पृथ्वी पर बारिश को बूँद ने धरती के अधरों पर अमृत टपका दिया अर्थात् सूखे की समस्या से लोगों को राहत मिली। धरती की रोमावलि अर्थात् रोमों की पंक्ति की भाँति हरी भास भी मुस्कुराने लगी थी। वह पहली बूँद थी जो पृथ्वी पर आई जिससे प्रकृति पुलकित हो उठी।

ऐसा प्रतीत हो रहा है मानों आकाश में सागर उड़ता है जो कड़कती बिजलियों के स्वर्णिम पर टकरा जाता है। चारों और नगाड़े का शोर है जो बादल और धरती की तरुणाई को दूर कर रहे हैं। इन्हीं बादलों के माध्यम से वर्षो की पहली बूँद धरती पर आई है। कवि ने आकाश की तुलना आँखों से की है। बारिश के प्रेम से धरती परिपूर्ण हो जाती है।

शब्दार्थ

- **पावस** – पवित्र
- **दिवस** – दिन
- **धरा** – पृथ्वी
- **नव** – जीवन
- **नवीन** – जीवन या नया जीवन
- **अधरों** – होंठ
- **वसुंधरा** – पृथ्वी
- **दूब** – घास
- **तरुणाई** – युवावस्था, जवानी

काव्यांशों की व्याख्या

काव्यांश-1

वह पावस का प्रथम दिवस जब
पहली बूँद धरा पर आई।
अंकुर फूट पड़ा धरती से,
नव-जीवन को ले अंगड़ाई।
धरती के सूखे अधरों पर,
गिरी बूँद अमृत-सी आकर।
वसुंधरा की रोमावलि-सी.
हरी दूब पुलकी मुसकाई।
पहली बूँद धरा पर आई ॥

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ मल्हार पुस्तक में 'पहली बूँद' कविता से अवतरित हैं जिसके रचयिता गोपालकृष्ण कौल है।
प्रसंग- कवि ने बूँद के महत्त्व के विषय में बताया है।
व्याख्या- कवि बताता है कि वर्षो की पहली बूँद जो अत्यन्त पवित्र है वह एक दिन पृथ्वी पर आकर गिरी। उस वर्षा के कारण अनेक बीज अंकुरित होकर प्रस्फुटित होने लगे जिसमें से पौधों को नवीन जीवन प्राप्त हुआ।

egyanarchive

कवि आगे बताता है कि पृथ्वी के सूखे ओठों पर वर्षा की बूंद अमृत के समान आकर टपक गई जिससे पृथ्वी का रोम-रोम जगमगाने लगा। हरी घास भी ऐसी प्रतीत हुई कि मुस्कुरा रही है। इस पहली बूँद ने जीवन में उल्लास का संचार किया।

काव्यांश-2

आसमान में उड़ता सागर
लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर।
बजा नगाड़े जगा रहे हैं
बादल धरती की तरुणाई।
पहली बूँद धरा पर आई ॥
नीले नयनों-सा यह अंबर
काली पुतली से ये जलधर।
करुणा-विगलित अनु बहाकर,
धरती की चिर-प्यास बुझाई।
बूढ़ी धरती शस्य-श्यामला
बनने को फिर से ललचाई।
पहली बूँद धरा पर आई ॥

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ मल्हार पुस्तक में 'पहली बूँद' कविता से अवतरित हैं जिसके रचयिता गोपालकृष्ण कौल है।
प्रसंग- कवि ने बूँद के विषय में बताया है तथा प्रकृति का मानवीकरण (मानव के गुणों जैसा) किया है।
व्याख्या- वर्षा की पहली बूँद के कारण प्रकृति में कई परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। आकाश में जल रूपी बादलों में बिजली चमक रही है। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानों सागर बिजलियों के स्वर्णिम पंख लगाकर आसमान में उड़ रहा ही। बादलों में बिजली की गर्जना सुनकर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानों नगाड़े बजाकर पृथ्वी की यौवनता को जगा रहे है। कवि कहता है कि नीली आँखों-सा यह आसमान है जिसमें काली पुतली के समान बादल हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो बादल आँसू के समान वर्षा कर रहा हो। वर्षा के कारण धरती फिर से हरी भरी होकर जगमगा उठी है। बूढ़ी धरती वर्षा से फिर जीवित हो उठी। यह बूँद का एक सुन्दर परिणाम है।

पाठ से आगे

मेरी समझ से

1. (क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए।

(1) कविता में नव-जीवन की ले अंगड़ाई किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

- बादल
- बूँद
- अंकुर
- पावस

उत्तर – अंकुर (☆)

(2) 'नीले नयनों-सा यह अम्बर काली पुतली-से ये जलधर' 'काली पुतली' है-

- बारिश की बूँदें
- नगाड़ा
- वृद्ध धरती
- बादल

उत्तर – बादल (☆)

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने ?

उत्तर – ये उत्तर हमने इसलिए चुने क्योंकि इनका वर्णन कविता के भीतर किया गया है।

मिलकर करें मिलान

(क) कविता की कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन पंक्तियों में कुछ शब्द रेखांकित हैं। दाहिनी ओर रेखांकित शब्दों के भावार्थ दिए गए हैं। इनका मिलान कीजिए।

कविता की पंक्तियों	भावार्थ
1. आसमान में उड़ता सागर, लगा बिजलियों के बादल स्वर्णिम पर	1. मेघ-गर्जना
2. बजा नगाड़े जगा रहे है, बादल धरती की तरुणाई	2. बादल
3. नीले नयनों-सा यह अम्बर पुतली-से काली ये जलधर।	3. हरी दूब
4. वसुंधरा की रोमावलि-सी. हरी दूब पुलकी-मुसकाई।	4. आकाश

उत्तर –

कविता की पंक्तियों	भावार्थ
1. आसमान में उड़ता सागर, लगा बिजलियों के बादल स्वर्णिम पर	2. बादल
2. बजा नगाड़े जगा रहे है, बादल धरती की तरुणाई	1. मेघ-गर्जना
3. नीले नयनों-सा यह अम्बर पुतली-से काली ये जलधर।	4. आकाश
4. वसुंधरा की रोमावलि-सी. हरी दूब पुलकी-मुसकाई।	3. हरी दूब

पंक्तियों पर चर्चा

(क) कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इनका अर्थ लिखिए।

क्यों चुने ?

1. "आसमान में उड़ता सागर लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर बजा नगाड़े जगा रहे हैं. बादल धरती की तरुणाई।"

उत्तर – ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो आसमान में समुद्र का जल बादलों में स्वर्णिम बिजली सुनहरे पंख लगाकर उड़ रही है अर्थात् चमक रही है। इस बिजली के गर्जन से ऐसा लग रहा है मानो नगाड़े बज रहे हैं। यह नगाड़े पृथ्वी की यौवनता (जवानी) को जगा रहे हैं।

2. "नीले नयनों सा यह अंबर, काली पुतली से ये जलधर। करुणा-विगलित अश्रु बहाकर धरती की चिर-प्यास बुझाई।"

उत्तर – नीले आँखों-सा यह आकाश है जिसमें काली पुतली के समान बादल है जिसके भीतर वर्षा रूपी अनु की धारा दुःख से प्रवाहित हो रही है जिसने पृथ्वी की स्थायी प्यास को बुझाया है।

सोच-विचार के लिए

1. बारिश की पहली बूँद से धरती का हर्ष कैसे प्रकट होता है?

उत्तर – बारिश की पहली बूँद से बीज अंकुरित होकर निकलने लगते हैं जिससे चारों ओर हरियाली छा जाती है।

2. कविता में आकाश और बादलों को किनके समान बताया गया है?

उत्तर – कविता में आकाश को नीले नयनों के समान तथा बादलों को आँखों की काली पुतली के समान बताया है।

कविता की रचना

'आसमान में उड़ता सागर, लगा बिजलियों के स्वर्णिम पर' इस प्रकार की पंक्तियाँ कविता की सुदंरता बढ़ाते हैं बल्कि उसे आनंददायक भी बनाते हैं। इस कविता में ऐसे दृश्यों को पहचानें और उन्हें लिखें

उत्तर – "नीले नयनों सा यह अंबर काली पुतली-से ये जलधर।

भावार्थ – नीली आँखों जैसा आसमान है और बादल आँखों की काली पुतली के समान प्रतीत हो रहे हैं।

शब्द एक अर्थ अनेक

'अंकुर फूट पड़ा धरती से नव-जीवन की ले अंगड़ाई' कविता की इस पंक्ति में **'फूटने'** का अर्थ- **'पौधे का अंकुरण'** है। 'फूट' का प्रयोग अलग-अलग अर्थों में किया जाता है, जैसे-फूट डालना, घड़ा फूटना आदि।

प्रश्न – फूट शब्द का प्रयोग ऐसे वाक्यों में कीजिए जहाँ इसके भिन्न-भिन्न अर्थ निकलते हों।

उत्तर –

(i) पानी की टंकी फूट गई।

(ii) श्याम और रामू में फूट पड़ गई।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

'नीले नयनों-सा यह अंबर, काली पुतली से ये जलधर' कविता की इस पंक्ति में **'जलधर'** शब्द आया है। 'जलधर' दो शब्दों से बना है, **जल और धर**। इस प्रकार जलधर का शाब्दिक अर्थ हुआ- **'जल को धारण करने वाला'।**

प्रश्न – 'धर' से मिलकर बने कुछ शब्द और उनके अर्थ ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर –

शब्द		अर्थ
(i) चक्रधर	-	चक्र धारण करने वाला (विष्णु)
(ii) विद्याधर	-	ज्ञान (विद्या) से भरा हुआ
(iii) महीधर	-	पर्वत
(iv) गंगाधर	-	शिव (गंगा नदी को सिर पर धारण करने वाले)

शब्द पहेली

दिए गए शब्द-जाल में प्रश्नों के उत्तर खोजें-

(क) एक प्रकार का वाद्य यंत्र

(ख) आँख के लिए एक अन्य शब्द

(ग) जल को धारण करने वाला

(घ) एक प्रकार की घास

(ङ) आँसू का समानार्थी

(च) आसमान का समानार्थी शब्द

न	य	न	ल
गा	दू	ब	अं
ड़ा	अ	श्रु	ब
ज	ल	ध	र

उत्तर –

(क) नगाड़ा (ख) नयन (ग) जलधर (घ) दूब (ङ) अश्रु (च) अंबर

आपकी बात

(क) बारिश को लेकर हर व्यक्ति का अनुभव भिन्न होता है। बारिश आने पर आपको कैसा लगता है? बताइए।

उत्तर – बारिश आने पर मुझे अच्छा लगता है। मन खुश हो जाता है।

(ख) आपको कौन-सी ऋतु सबसे अधिक प्रिय है और क्यों? बताइए।

उत्तर – मुझे वसंत ऋतु अधिक प्रिय है क्योंकि इस ऋतु में चारों और हरियाली होती है।

समाचार माध्यमों से

अत्यधिक गर्मी सर्दी या बारिश में आपने जो स्थिति देखी है उसका आँखों देखा हाल अपनी कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर – आज मथुरा, आगरा जिले में अत्यधिक गर्मी से लोगों का हाल अत्यन्त बुरा हो गया है। लोग वर्षा की पहली बूँद के लिए तरस गए हैं।

सृजन

नाम देना भी सृजन है। ऊपर दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और इसे एक नाम दीजिए।

उत्तर – रेगिस्तान में खिलता फूल

इन्हें भी जानें

इस कविता में नगाड़े की ध्वनि का उल्लेख है- "वाजा नगाड़े जगा रहे हैं, बादल धरती की तरुणाई।" नगाड़ा भारत का एक पारंपरिक वाद्ययंत्र है। कुछ वाद्ययंत्रों को उन पर चोट कर बजाया जाता है, जैसे ढोलक, नगाड़ा, डमरू, डफली आदि। नगाड़ा प्रायः लोक उत्सवों के अवसर पर बजाया जाता है। होली जैसे लोकपर्व के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में इसका प्रयोग होता है। नगाड़ों को जोड़े में भी बजाया जाता है जिसमें एक की ध्वनि पतली तथा दूसरे की मोटी होती है। **(छात्र नगाड़े आदि के विषय में जानेंगे।)**

ढोलक - https://youtube.com/shorts/Q_TiGoXobwA?si=mj2YS0iFjMlnbf60

नगाड़ा - https://youtube.com/shorts/k0pNht7uMu8?si=OgvruznV3XZhAl_O

डमरू - https://youtube.com/shorts/AF0MyoZAfIQ?si=-FxNDT-U5p5P04U0

डफली - https://youtube.com/shorts/wQUtsfx8-tk?si=9Na23htUzlJr1HKM

खोजबीन

आपके यहाँ उत्सवों में कौन-से वाद्ययंत्र बजाए जाते हैं? उनके बारे में जानकारी एकत्र करें।

उत्तर – (छात्रों को स्वयं उत्तर देने दें)

हमारे यहाँ उत्सवों में ढोलक, मंजीरा आदि बजाया जाता है।

आइए इंद्रधनुष बनाएँ

बारिश की बूँदें न केवल जीव-जन्तुओं को राहत पहुँचाती हैं बल्कि धरती को हरा-भरा भी बनाती हैं। कभी-कभी ये बूँदें आकाश में बहुरंगी छटा बिखेरती हैं जिसे इंद्रधनुष' कहा जाता है। आप भी एक सुंदर इंद्रधनुष बनाइए और उस पर एक छोटी-सी कविता लिखिए। इसे कोई प्यारा सा नाम भी दीजिए।

उत्तर – (छात्रों को इन्द्रधनुष बनाने को कहें और इन्द्रधनुष से जुडी कविता ढूँढने को या स्वयं तुकबंदी के साथ निर्माण करने को कहें।)

इन्द्रधनुष

सात रंगों की छाया प्यारी,
बादल के आँचल में सवारी।
बारिश के आँसू थम जाते हैं,
तब इन्द्रधनुष मुस्काते हैं।
नीला, पीला, लाल सुनहरा,
हर रंग कहे कुछ और गहरा।
आसमान में पुल सा बनता,
सपनों को वो रंगों में बुनता।

सुभद्राकुमारी चौहान की यह कविता बहुत सुंदर है:

इंद्रधनुष

देखो नभ में इन्द्रधनुष है,
किसने इसे सजाया?
जैसे सात रंग की साड़ी,
नभ की बहन ने पाया।

egyanarchive